

शिक्षा के प्रति भारतीय दर्शन में रवीन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द के विचार

नीतू शर्मा, हिन्दी विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

प्रस्तावना

टैगोर और विवेकानन्द की धर्म की अवधारणाएँ कुछ बिंदुओं पर एक-दूसरे से और धर्म के सामान्य विचार से भिन्न हैं। लेकिन दोनों ने अपने यथार्थवादी, गतिशील, व्यावहारिक विचारों को अलग-अलग तरीकों से अपने कार्यों में प्रतिबिंबित किया और मानव जाति पर भी जोर दिया। इसलिए, दोनों अवधारणाओं के अपने-अपने कई दृष्टिकोणों में मूल्य हैं। इन दोनों महापुरुषों द्वारा प्रदत्त धर्म की अवधारणाएँ इस आधुनिक युग में व्यावहारिक क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा सकती हैं। टैगोर द्वारा वर्णित धर्म किसी विशिष्ट समूह को परिभाषित नहीं करता है। उनका धर्म संपूर्ण मानव जाति पर आधारित है। यह मनुष्य का सार और मनुष्य की आंतरिक प्रकृति का स्वरूप है। टैगोर एक सार्वभौमिक दार्शनिक थे लेकिन उनके धर्म का दर्शन पूर्णतः व्यक्तिगत एवं मानव केन्द्रित है। उनके लिए , धर्म पूर्णता का एहसास कराने का अभ्यास है और सभी के लिए शांति लाने की शक्ति प्रदान करता है। उनका विचार था कि मनुष्य को अपने अस्तित्व की संपूर्णता , अनंत में अपने स्थान का एहसास होना चाहिए; उसे पता होना चाहिए कि चाहे वह कितनी भी कोशिश कर ले , वह कभी भी छत्ते की कोशिकाओं के भीतर अपना शहद नहीं बना सकता; उसके जीवन की शाश्वत आपूर्ति के लिए भोजन उनकी दीवार के बाहर है। (टैगोर , 1915)। टैगोर की मानवतावाद की अवधारणा मुख्य रूप से वैष्णववाद की शिक्षा पर आधारित उनके धार्मिक दर्शन में परिलक्षित होती है। उन्होंने मनुष्य का मूल्य दिखाया कि कैसे मनुष्य स्वयं पूर्णता से जुड़ा हुआ है। वह शांति के साधक थे। वह चाहते थे कि लोग प्रकृति के मूल्य को समझें और एक बेहतर इंसान बनें। 21वीं भौतिकवादी दुनिया में शांति से रहने के लिए उनका धर्म पालन करने योग्य है। उनके धर्म का पालन करके हम एक तरह से आध्यात्मिक हो सकते हैं।

मुख्य-शब्द: सार्वभौमिक दार्शनिक, भौतिकवादी दुनिया, व्यक्तिगत एवं मानव केन्द्रित

शोध कार्य की विधि

इस कार्य में अन्वेषक स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार और व्यवहारवर्तमान सन्दर्भ में उनके महत्व एवं महत्ता को जानने की दृष्टि से दार्शनिक पद्धति अपनाकर वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करेगा। हालाँकि अध्ययन का शीर्षक इसे चिह्नित कर सकता है शिक्षा दर्शन के क्षेत्र के अंतर्गत अन्वेषक ने इसे सामाजिक दृष्टि से देखा है। विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार वर्तमान की कई समस्याओं का समाधान करेंगे भारत इस तथ्य के आलोक में कि वे 19वीं और 20वीं में सामाजिक-राजनीतिक प्रेरणा के वास्तविक स्रोत थे।

गुणात्मक अनुसंधान पारंपरिक अनुसंधान में उपयोग किए जाने वाले डेटा के विभिन्न रूपों का उपयोग करता है, जैसा कि पैटम आगे कहते हैं:

“गुणात्मक तरीकों में तीन प्रकार के डेटा शामिल होते हैं: (1) गहन खुले साक्षात्कार (2) प्रत्यक्ष अवलोकन और (3) लिखित दस्तावेज़।

साक्षात्कारों के डेटा में लोगों के सीधे उद्घरण उनके अनुभवों , राय, भावनाओं और ज्ञान के बारे में शामिल होते हैं। डेटा अवलोकनों में लोगों

की गतिविधियों, कार्यों आदि का विस्तृत विवरण शामिल होता है पारस्परिक संपर्क और संगठनात्मक प्रक्रियाओं की पूरी श्रृंखला भी मानवीय अनुभव इसका हिस्सा हैं। अवलोकनों से प्राप्त डेटा में लोगों की गतिविधियों, कार्यों और पारस्परिक संबंधों की पूरी श्रृंखला का विवरण अंतः क्रिया और संगठनात्मक प्रक्रियाएं जो देखने योग्य मानव का हिस्सा हैं विस्तृत जानकारी शामिल है। गुणात्मक जांच में दस्तावेज़ विश्लेषण से अंश, उद्धरण, या संगठनात्मक नैदानिक कार्यक्रम रिकॉर्ड, ज्ञापन और से संपूर्ण मार्गपत्राचार, आधिकारिक प्रकाशन और रिपोर्ट, व्यक्तिगत डायरियाँ, और ओपन एंडेड प्रश्नावली और सर्वेक्षणों के लिखित उत्तर प्राप्त होते हैं।" (पैटम. 1990, पृ. 12) अधिकांश डेटा सीधे स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर के कार्यों से प्राप्त जाएंगे।

शोधपरिणाम

शिक्षाके प्रति भारतीय दर्शन में रवीन्द्रनाथ टैगोर और स्वामी विवेकानन्द के विचार

आर.एन. टैगोर के अनुसार, शिक्षा हमें धूल के बंधनों से मुक्त करती है और हमें एक समृद्धि प्रदान करती है जो भौतिक संपत्ति से नहीं बल्कि आंतरिक प्रकाश, प्रेम और सत्य को संप्रेषित करने की क्षमता से बनी होती है। टैगोर के अनुसार, उच्चतम शिक्षा वह है जो हमें केवल ज्ञान प्रदान करने के बजाय मानव जाति के सामंजस्यपूर्ण सदस्यों में बदल देती है। टैगोर लगातार बच्चे की स्वतंत्रता के महत्व पर जोर देते हैं। उनका लक्ष्य बच्चों को उबाऊ प्रोफेसरों और स्कूल जैसी संस्थाओं से मुक्त कराना था। स्वतंत्रता की उपलब्धता और खुले शैक्षिक माहौल के माध्यम से, उन्होंने इस स्थिति का समाधान करने की आशा की। उनके अनुसार, युवा को उस पक्षी की तरह उन्मुक्त होना चाहिए जो बिना किसी बाधा के विस्तृत आकाश में उड़ता है।

स्कूल जाने के अपने अनुभवों के आधार पर उन्हें यकीन था कि छोटे बच्चे कक्षा की चारदीवारी के भीतर कम स्वतंत्र थे। उन्होंने सामान्य स्कूल की तुलना जेल से की। उनका मानना है कि शिक्षा जीवन यात्रा का एक निरंतर घटक है। यह छात्रों की अज्ञानता-संबंधी बीमारी को ठीक करने के लिए दर्दनाक उपचार प्राप्त करने जैसा नहीं है; बल्कि, यह उनकी मानसिक भलाई और उनके खुद को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त करने के तरीके की एक विशेषता है। जिस तरह से शिक्षा को कैरियर-उन्मुख और जीविकोपार्जन पर केंद्रित किया गया है, उसकी टैगोर ने आलोचना की थी। टैगोर के अनुसार, गाँव के लोगों को शुरू से ही इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए ताकि वे समझ सकें कि जन कल्याण का तात्पर्य क्या है और जब अपने निर्वाह को सुरक्षित करने की बात आती है तो वे हर तरह से व्यावहारिक रूप से कुशल हो जाते हैं। प्रकृति और जीवन से सीखना टैगोर की शैक्षणिक अवधारणा का केंद्र था। विवेकानन्द के समान, टैगोर ने तपस्या और साधना को उच्च महत्व दिया। यह शिक्षा में वास्तविक जीवन शिक्षा की एक पद्धति के रूप में ब्रह्मचर्य की भ्रामक प्रस्तुति है। विवेकानन्द के समान, टैगोर ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा आदर्श व्यक्ति के लिए होनी चाहिए। व्यक्ति का समग्र, सामंजस्यपूर्ण विकास शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। पुरुषत्व की पराकाष्ठा हार्मोनिक विकास का यह स्तर है। शिक्षण के प्रति टैगोर के दृष्टिकोण की नवीनता उनके लक्ष्यों में नहीं बल्कि उनके द्वारा चुनी गई गतिविधियों में निहित है।

बच्चों को जैविक के प्रति जागरूक करने के लिए मानव व्यक्तित्व की अखंडता , स्व-रोजगार के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता और मानव क्षमताओं के विकास के लिए उन्होंने गतिविधियों का एक सेट सुझाया। सबसे महत्वपूर्ण प्रथाओं और आवश्यकताओं में से एक मातृभाषा शिक्षा है। अन्य महत्वपूर्ण प्रथाओं और आवश्यकताओं में काम की स्वतंत्रता शामिल है ; सादगी का अभ्यास; गरीबी के बिना तपस्या ; स्वयं सहायता; आत्म-अनुशासन; कॉर्पोरेट जीवन; मेहमानों, बड़ों और महिलाओं के प्रति सम्मान; और प्रकृति, शिक्षकों और समाज के साथ घनिष्ठ संबंध। मानक विषयों के अलावा , वैकल्पिक छात्र परिसर की सफाई , दैनिक प्रार्थना, बागवानी, शिल्प, संगीत, नृत्य और थिएटर के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेते हैं। पूर्ण पुरुषत्व तक पहुँचने के लिए स्वशासन एक आवश्यक चरण है। टैगोर के विश्वास के विपरीत , शिक्षा का उपयोग पुरुषों द्वारा जीवन में अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को पूरा करने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जाना चाहिए। कई उदाहरणों में , टैगोर ने विभिन्न शैक्षिक उद्देश्यों पर जोर दिया। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा मानव की सम्पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उन्होंने स्व-शिक्षा के विचार का समर्थन किया। शिक्षक केवल छात्र को प्रेरित या प्रोत्साहित करता है और उसे उस ज्ञान की खोज में सहायता करता है जो पहले से ही उसके अंदर छिपा हुआ है। स्वामी विवेकानन्द ने माना कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर ध्यान तेजी से लोगों को मशीनों की स्थिति में ला रहा है।

सभ्यता के मौलिक सिद्धांतों की उपेक्षा की जा रही है , और नैतिक और धार्मिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। शिक्षा के माध्यम से , स्वामी विवेकानन्द इन सभी सामाजिक और वैश्विक बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने स्व-शिक्षा के विचार का समर्थन किया। शिक्षक केवल छात्र को प्रेरित या प्रोत्साहित करता है और उसे उस ज्ञान की खोज में सहायता करता है जो पहले से ही उसके अंदर छिपा हुआ है। केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा ही किसी व्यक्ति की सभी छिपी हुई क्षमताओं को सामने ला सकती है। मानवता , मनुष्य के चरित्र की नींव और स्वस्थ व्यक्तित्व का सच्चा संकेतक, ऐसी चीज़ है जिसे सच्ची शिक्षा के हिस्से के रूप में बढ़ावा दिया जाना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से, एक व्यक्ति को बदलते सामाजिक परिवेश की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूलनीय और सुसज्जित बनना चाहिए। शिक्षा का लक्ष्य बच्चों को आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक रूप से विकसित होने में मदद करना है। यह स्वामी विवेकानन्द ही थे जिन्होंने सार्वभौमिक शिक्षा के लिए संघर्ष किया। शिक्षा को मानवीय एकजुटता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षा को हमें यह देखने और ऐसा करने में मदद करनी चाहिए और हमें यह सिखाना चाहिए कि जनता की सेवा करना भगवान की सेवा करना है। शिक्षा में विद्यार्थियों को किताबों से पढ़ना, भूमिकाएँ निभाना या ढेर सारी सामग्री प्राप्त करना शामिल नहीं होना चाहिए। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो व्यक्ति के चरित्र के विकास, विचारों को आत्मसात करने और समग्र कल्याण को बढ़ावा दे।

उनके लिए, शिक्षा वह प्रक्रिया है जो नैतिक अखंडता, मानसिक दृढ़ता और बौद्धिक तीक्ष्णता विकसित करती है ताकि कोई व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। विवेकानन्द ने सोचा कि सौन्दर्य या ललित कलाओं की शिक्षा दिये बिना शिक्षा पूरी नहीं होती। आत्मनिर्भरता भारत में शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य है। पारंपरिक , धार्मिक और सांस्कृतिक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ व्यक्ति को व्यावहारिक कौशल और शब्दावली में भी प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। विवेकानन्द का लक्ष्य शिक्षा को पूर्णतः आत्मनिर्भर बनाना था। देश की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए

स्कूलों और संस्थानों में पश्चिमी इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी पढ़ाई जानी चाहिए। प्रत्येक बच्चे की शिक्षा में व्यावसायिक विषय शामिल होने चाहिए। स्कूल में लड़कियों को खाना बनाना, सुई का काम, बच्चों का पालन-पोषण, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान सिखाया जाना चाहिए। यह सच है कि शिक्षार्थी को जीवन में चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होना चाहिए। उसे अच्छे चरित्र , दान की भावना विकसित करने के महत्व के प्रति भी सचेत रहना चाहिए, और ईमानदारी , निष्ठा, कर्तव्य, जिम्मेदारी इत्यादि जैसे गुणों का अभ्यास करना। एक छात्र अपने क्षेत्र में उच्च पद पर आसीन हो सकता है, लेकिन उसे एक जिम्मेदार नागरिक का दर्जा नहीं दिया जा सकता है, जिसके मन में अपने राष्ट्र और उसके नागरिकों के प्रति प्रेम होना चाहिए। हमारा देश जिस एकमात्र सूचना देने वाली शिक्षा प्रणाली का समर्थन और पोषण करता है , वह मनुष्य के महान गुणों को बढ़ाने में कभी सफल नहीं हो सकती। एक छात्र में नैतिकता , उत्तम चरित्र, ईमानदारी, सम्मान, न्याय, ईमानदारी और सदाचार की भावना विकसित करने में शिक्षक का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। विवेकानन्द के अनुसार , एक शिक्षक को छात्र के दार्शनिक, मित्र और मार्गदर्शक के साथ-साथ एक कुशल चरित्र निर्माता , जानकार दिमाग प्रशिक्षक, ईमानदार बुद्धि विकासकर्ता और निःस्वार्थ ज्ञान प्रवर्तक के रूप में कार्य करना चाहिए। पश्चिमी विज्ञान का अध्ययन करते समय , एक छात्र को वेदांत के मूल सिद्धांतों को भी कंठस्थ करना चाहिए, पूर्ण ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना चाहिए , और दूसरों और स्वयं दोनों के प्रति आत्मविश्वास से सम्मान दिखाने की आदत विकसित करनी चाहिए।

संदर्भ सूची

1. भजनानंद, एस. (2008)। श्री रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण से धर्मों का सामंजस्य। रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान: कोलकाता।
2. दास, एस. (1991)। विवेकानन्द, मानव मुक्ति के पैगंबर: स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक दर्शन पर एक अध्ययन। एस.एम. विजया दासगुप्ता: गोल्फ ग्रीन, केजोलकाटा।
3. डाल्टन, डी.जी. (1982)। स्वतंत्रता का भारतीय विचार: स्वामी विवेकानन्द , अरबिंदो घोष, महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के राजनीतिक विचार। अकादमिक प्रेस: गुडगांव, हरियाणा।
4. ग्रीन, टी. जे (2016)। धर्मनिरपेक्ष युग के लिए धर्म: मैक्स मुलर, स्वामी विवेकानन्द और वेदांत। रूटलेज टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।
5. ग्रेग, एस.ई. (2019)। स्वामी विवेकानन्द और गैर-हिन्दू परम्परा। टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।
6. घोष, आर. (2017)। सौंदर्यशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, और टैगोर: शिक्षा का एक पारसांस्कृतिक दर्शन। पालग्रेव मैकमिलन: यूके।
7. गुप्ता, के.एस. (2005)। रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन. एशगेट: यूएसए।
8. होगन, पी.सी. एवं एल. पंडिता (सं.) (2003)। रवीन्द्रनाथ टैगोर: सार्वभौमिकता और परंपरा। रोज़मॉट प्रकाशन: न्यू जर्सी।

9. निखिलानंद, एस (1953)। विवेकानन्द एक जीवनी. न्यूयॉर्क का रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र: न्यूयॉर्क।
10. रत्ना रेड्डी, ए.वी. (1984)। स्वामी विवेकानन्द का राजनीतिक दर्शन। स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड: नई दिल्ली।
11. राधाकृष्णन, एस. (1918)। रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन. मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड: लंदन।
12. शर्मा, जे. (2013)। धर्म का पुनर्कथन: स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद का निर्माण। येल यूनिवर्सिटी प्रेस: न्यू हेवन और लंदन।
13. टैगोर, आर. (1931). मनुष्य का धर्म. मैकमिलन कंपनी: न्यूयॉर्क।
14. टैगोर, आर (1922)। रचनात्मक एकता. मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड: न्यूयॉर्क।
15. टैगोर, आर. (1978). अधिशेष का दूत. कलकत्ता: विश्वभारती।
16. टैगोर, आर.(1915)। साधना: जीवन का बोध. न्यूयॉर्क: द मैकमिलन कंपनी।
17. टुटेजा, के.एल. एवं के. चक्रवर्ती। (2017)। टैगोर और राष्ट्रवाद. स्प्रिंगर: दिल्ली।
18. तेजसानंद, एस. (1995). स्वामी विवेकानन्द का संक्षिप्त जीवन। अद्वैत आश्रम: कोलकाता।
19. विवेकानन्द. एस. (1931). धर्म का विज्ञान और दर्शन. स्वामी आत्मबोधानंद: कोलकाता।
20. विवेकानन्द, एस. (2015)। ज्ञान योग. प्रभात प्रकाशन: दिल्ली।
21. टैगोर, आर.(2015)। साधना: जीवन का बोध www से लिया गया।
22. रवीन्द्रनाथ टैगोर. (1998)। साधना: जीवन का बोध (1915)। केसिंजर पब।
23. विवेकानन्द, एस., और रामकृष्ण वेदांत केंद्र। (1982)। कर्म-योग ; और, भक्ति-योग। रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र।
24. आहूजा, एन.पी., शिक्षा के सिद्धांत और सिद्धांत, अनमोल पब्लिकेशन प्राइवेट। लिमिटेड नई दिल्ली।
25. चक्रवर्ती, मोहित, आर.एन.टैगोर का शिक्षा दर्शन, अटलांटिक पब्लिशर्स।
26. डाल्टन, डी. जी. (1982)। स्वतंत्रता का भारतीय विचार: स्वामी का राजनीतिक विचार।
27. विवेकानन्द, अरविन्द घोष, महात्मा गाँधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर। अकादमिक प्रेस: गुडगांव, हरियाणा।
28. दास, एस. (1991). विवेकानन्द, मानव मुक्ति के पैगम्बर: स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक दर्शन पर एक अध्ययन। एस.एम. बिजया दासगुप्ता: गोल्फ ग्रीन, कोलकाता।
29. घोष, आर. (2017)। सौंदर्यशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, और टैगोर: शिक्षा का एक पारसांस्कृतिक दर्शन। पालग्रेव मैकमिलन: यूके।
30. ग्रीन, टी. जे (2016)। धर्मनिरपेक्ष युग के लिए धर्म: मैक्स मुलर , स्वामी विवेकानन्द, और वेदान्त। रूटलेज टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।

31. ग्रेग, एस.ई. (2019)। स्वामी विवेकानन्द और गैर-हिन्दू परम्परा। टेलर और फ्रांसिस समूह: लंदन और न्यूयॉर्क।
32. गुप्ता, के.एस. (2005)। रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन. एशगेट: यूएसए।
33. गुप्ता, एन.एल., आर.एन. टैगोर: एक शैक्षिक विचारक, अनमोल प्रकाशन।
34. होगन, पी. सी और एल. पंडिता (सं.) (2003)। रवीन्द्रनाथ टैगोर: सार्वभौमिकता और परंपरा। रोजमोंट प्रकाशन: न्यू जर्सी।
35. निखिलानंद, एस (1953)। विवेकानन्द एक जीवनी. न्यूयॉर्क का रामकृष्ण-विवेकानंद केंद्र: न्यूयॉर्क।
36. राधाकृष्णन, एस. (1918). रवीन्द्रनाथ टैगोर का दर्शन. मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड: लंदन।
37. रत्ना रेड्डी, ए.वी. (1984)। स्वामी विवेकानन्द का राजनीतिक दर्शन। स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड: नई दिल्ली।
38. शर्मा, जे. (2013). धर्म का पुनर्कथन: स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद का निर्माण। येल यूनिवर्सिटी प्रेस: न्यू हेवन और लंदन।
39. टैगोर, आर (1922). रचनात्मक एकता. मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड: न्यूयॉर्क।
40. टैगोर, आर. (1931). मनुष्य का धर्म. मैकमिलन कंपनी: न्यूयॉर्क।
41. टैगोर, आर. (1978). अधिशेष का दूत. कलकत्ता: विश्वभारती।
42. टैगोर, आर. (1915). साधना: जीवन का बोध. न्यूयॉर्क: द मैकमिलनकंपनी।